

केरल में बाढ़ की स्थिति

प्रलम्ब के लिये:

बाढ़, भूस्खलन, चालकुडी नदी, माधव गाडगलि समिति, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए)

मेन्स के लिये:

भारत में शहरी बाढ़, आपदा प्रबंधन

चर्चा में क्यों?

केरल एक बार फिर **बाढ़** जैसी स्थिति का सामना कर रहा है, जैसा कि वर्ष 2018 में तेज़ **मानसूनी हवाओं** के कारण उच्च तीव्रता की वर्षा की स्थिति देखी गई थी।

- इसके अलावा बंगाल की खाड़ी के ऊपर 2-3 दिनों के भीतर एक कम दबाव का क्षेत्र बनने की उम्मीद है, जिससे वर्षा के बढ़ने की संभावना है।

वर्ष 2018 में केरल में बाढ़:

- केरल में वर्ष 1924 के बाद से सबसे भीषण बाढ़ अगस्त 2018 में मूसलाधार बारिश के बाद आई।
- बाँधों के कनारे तक पानी भर जाने एवं अन्य स्थलों पर भी बहुत अधिक जल जमा हो जाने के कारण बाँध के फाटकों को खोलना पड़ा।
 - 50 बड़े बाँधों में से कम-से-कम 35 को पहले से ही बाढ़ वाले क्षेत्रों में पानी छोड़ने के लिये खोला जा चुका था।
- समय के साथ गाद के जमाव ने बाँधों और आसपास की नदियों की जल धारण क्षमता को काफी कम कर दिया था, जिससे तटबंधों और नालों में बाढ़ का पानी भर गया।
 - गाद जमाव जिसने बाँध के अंतर्निर्मित क्षेत्र को कम कर दिया (धारण क्षमता को कम कर दिया), रेत खनन और पेड़ों की बड़े पैमाने पर कटाई तथा पश्चिमी घाट में जंगल की सफाई ने भी बाढ़ में एक प्रमुख कारक की भूमिका निभाई।

बाढ़:

- यह सामान्य रूप से शुष्क भूमि पर जल का अतिप्रवाह है। भारी बारिश, समुद्री की लहरों के साथ भारी मात्रा में जल की तट पर मौजूदगी, बर्फ का तेज़ी से पिघलना और बाँधों का टूटना आदिके कारण बाढ़ आ सकती है।
- बाढ़ यानी केवल कुछ इंच जल प्रवाह या घरों की छतों तक जल का पहुँचाना हानिकारक प्रभाव डाल सकती है।
- बाढ़ **अल्प-समय के भीतर या लंबी अवधि** में भी आ सकती है और यह स्थिति **दिनों, हफ्तों या उससे अधिक समय** तक रह सकती है। मौसम संबंधी सभी प्राकृतिक आपदाओं में बाढ़ सबसे आम और व्यापक प्रभाव डालती है।
- फ्लैश फ्लड** सबसे खतरनाक प्रकार की बाढ़ होती है, क्योंकि यह बाढ़ को वनिशकारी रूप प्रदान कर सकती है।

शहरी क्षेत्रों में नरिंतर रूप से बाढ़ आने के प्रमुख कारण:

- अनयोजित विकास:** अनयोजित विकास, तटवर्ती क्षेत्रों में अतिक्रमण, बाढ़ नियंत्रण संरचनाओं की वफिलता, अनयोजित जलाशय संचालन, खराब जल निकासी ढाँचा, **वनों की कटाई**, भूमि उपयोग में परिवर्तन और नदी के तल में अवसादन बाढ़ की घटनाओं को जन्म देते हैं।
 - भारी वर्षा के समय नदी तटबंधों को तोड़ देती है और कनारे एवं रेत की पट्टियों पर बसे हुए समुदायों को हानि पहुँचाती है।
- अनयोजित शहरीकरण:** शहरों और कस्बों में बाढ़ एक आम घटना बन गई है।
 - इसका कारण जलमार्गों और **आरदरभूमि** का अंधाधुंध अतिक्रमण, नालों की अपर्याप्त क्षमता तथा जल निकासी के बुनियादी ढाँचे के रखरखाव की कमी है।
 - खराब अपशिष्ट प्रबंधन के कारण नालियों, नहरों और झीलों की जल-प्रवाह क्षमता में कमी आती है।
- आपदा पूर्व योजना की उपेक्षा:** बाढ़ प्रबंधन के इतिहास से पता चलता है कि आपदा प्रबंधन का ध्यान मुख्य रूप से बाढ़ के बाद की क्षतिपूर्ति और

राहत पर रहा है।

- कई जलाशयों और हाइड्रो-इलेक्ट्रिक संयंत्रों में बाढ़ के स्तर को मापने के लिये पर्याप्त मापन केंद्र (Gauging Stations) नहीं हैं, जो बाढ़ के पूर्वानुमान के प्रमुख घटक हैं।

- **गाडगलि समिति की सफारिशों पर ध्यान न देना:** वर्ष 2011 में **माधव गाडगलि समिति** ने लगभग 1,30,000 वर्ग कमी क्षेत्र को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील क्षेत्र (गुजरात, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में वसितारति) के रूप में घोषित करने की सफारिश की।
 - हालाँकि छह राज्यों में से कोई भी केरल की सफारिशों से सहमत नहीं था, इन राज्यों ने विशेष रूप से खनन पर प्रस्तावित प्रतिबंध, निर्माण गतिविधियों पर प्रतिबंध और जलविद्युत परियोजनाओं पर प्रतिबंध को लेकर आपत्त जताई थी।
 - इस लापरवाही का नतीजा अब बार-बार आने वाली बाढ़ और भूस्खलन के रूप में साफ देखा जा सकता है।

आगे की राह

- बाँध सपलिवे के समय पर उदघाटन और अतिरिक्त वर्षा को अवशोषित करने के लिये जलाशयों की धारण क्षमता सुनिश्चित करने हेतु पूर्वानुमान एजेंसियों तथा जलाशय प्रबंधन प्राधिकरणों के बीच और अधिक समन्वय स्थापित करने की आवश्यक है।
 - आपदा हेतु तैयारियों को सुनिश्चित करने के लिये एक व्यापक बाढ़ प्रबंधन योजना की भी आवश्यकता है।
- शहरी विकास के सभी आयाम, कफायती आवास से लेकर भवषिय के जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने तक केंद्रीय भूमिका नभिते हैं।
 - नयोजति शहरीकरण से आपदाओं का सामना कथि जा सकता है, इसका आदर्श उदाहरण जापान है जो भूकंप और यहाँ तक कि सुनामी का सामना दूसरे देशों की तुलना में अधिक करता है।
- **वाटरशेड प्रबंधन और आपातकालीन जल निकासी योजना** को नीति एवं कानून में स्पष्ट कथि जाना चाहयि।
 - जल निकासी योजना को आकार देने के लिये चुनावी वार्डों जैसे शासन की सीमाओं के बजाय वाटरशेड जैसी प्राकृतिक सीमाओं पर वचिार करने की आवश्यकता है।

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्षों के प्रश्न (पीवाईक्यू):

प्रश्न. भारत के प्रमुख शहर बाढ़ की चपेट में आ रहे हैं। चर्चा कीजयि। (मुख्य परीक्षा, 2016)

प्रश्न. उच्च तीव्रता वाली वर्षा के कारण शहरी बाढ़ की आवृत्तवर्षों से बढ़ रही है। शहरी बाढ़ के कारणों पर चर्चा करते हुए ऐसी घटनाओं के दौरान जोखमि को कम करने की तैयारी के लिये तंत्र पर प्रकाश डालयि। (मुख्य परीक्षा, 2016)

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/flood-situation-in-kerala>